HIN3A12a-2012-10-02-nucléaire (transcription)

जल-सत्याग्रह का रंग अब तमिलनाडु के कुडमकुलुम पर भी चढ़ गया है। कुडमकुलम में न्यूक्लीयर प्लांट का विरोध कर रहे स्थानीय लोग आज समंदर में उतर कर विरोध कर रहे हैं। पिछले कई दिनों से प्रदर्शनकारी यहाँ पर डटे हुए हैं। बार-बार प्लांट की ओर बढ़ने की कोशिश भी करते हैं, लेकिन पुलिस के भारी बन्दोवस्त की वजह से उन्हें पीछे हटना पड़ रहा है। यहाँ भी प्रदर्शनकारियों ने विरोध के लिए जल-सत्याग्रह का तरीक़ा अब अख़्तियार कर लिया है। प्रदर्शनकारी अपना विरोध जताने के लिए समंदर के अंदर खड़े हो गए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि इस न्यूक्लीयर प्लांट के बनने से रेडियेशन का खतरा है इसलिए इसे बन्द करना चाहिए। इनका कहना है कि तत्काल प्रभाव से प्लांट में रेडिएशन भरने का काम बन्द किया जाए और आने वाले वर्ष में इस परियोजना को पूरी तरह से बन्द किया जाए। लेकिन सरकार की दलील है कि प्लांट में रेडिएशन से बचने के तमाम उपाय किए गए हैं, ये प्लांट सुरक्षित है। कुडनकुलम में न्यूक्लीयर प्लांट के विरोध में स्थानीय लोग आज भी प्रदर्शन पर डटे हुए हैं। आप देख रहे हैं वहाँ से पीली तस्वीरें किस तरह से समंदर में उतर कर स्थानीय लोग अपना विरोध जता रहे हैं, जल-सत्याग्रह का यह तरीका हमने सबसे पहले मध्यप्रदेश के खंडवा में देखा फिर हरदा में भी बाँध का विरोध कर रहे लोगों ने नदी में खड़े होकर अपना विरोध जताया। दो हफ़्ते तक लगातार ये लोग नदी में खड़े रहे लेकिन यहाँ पर समंदर में खड़े होकर ये स्थानीय लोग इस न्यूक्लीयर प्लांट का विरोध कर रहे हैं।

एटोमिक एनर्जी बोर्ड के साथ-साथ कई जाने-माने वैज्ञानिकों ने भी इस सरकार की तरफ से इस बात को रखा है कि ये प्लांट सुरक्षित है लेकिन दूसरी तरफ विरोध कर रहे प्रदर्शनकारी इनकी बात मानने को तैयार नहीं हैं। सरकार ये भी आरोप लगाती रही है कि कुछ विदेशी एनजीओ (NGO) इस विरोध-प्रदर्शन को भड़का रहे हैं। यहाँ आप देख सकते हैं समुद्र की लहरें किस तरह से इन प्रदर्शनकारियों को गिरा रही है। लेकिन इसके बावजूद ये फिर उठ खड़े होकर अपने प्रदर्शन पर डटे हुए हैं। इस तरह से लगातार समंदर में खड़े रहने के चलते इनकी जान का ख़तरा बढ़ गया है। जल-सत्याग्रह, यह कहना गलत नहीं होगा कि विरोध का एक नया हथियार बन गया है और मध्यप्रदेश से लेकर तमिलनाडु में अब इसकी मिसाल देखने को मिल रही है। कुडमकुलम का जो न्यूक्लीयर प्लांट है उसे सुरक्षाबल ने घेर कर एक तरह से सील कर दिया है जिससे कि प्रदर्शनकारी अंदर घुसने की कोशिश न कर पाएँ। लेकिन ये प्रदर्शनकारी अपनी माँगों पर डटे हुए हैं और विरोध को लेकर उन्होंने अब जल-सत्याग्रह का तरीका अपना लिया है। बड़ी संख्या में लोग समंदर में खड़े होकर रस्सी बाँधकर खड़े हैं। इन रस्सियों को पकड़कर खुद को सँभालने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन समंदर की लहरों का जो वेग है वो इतना ज्यादा है कि ये बारबार नीचे गिर जाते हैं लेकिन खुद को सँभालकर फिर उठ खड़े होते हैं और लगातार अपनी इस माँग पर कायम हैं कि इस न्यूक्लीयर प्लांट को बन्द किया जाए।

जल-सत्याग्रह अब विरोध का नया हथियार बन गया है पिछले एक हफ़्ते में पानी में होकर, खड़े होकर, विरोध जताने की तीसरी घटना है। सबसे पहले मध्यप्रदेश के खंडवा में लोगों ने जल-सत्याग्रह किया और सत्रह दिनों के बाद वे अपनी माँगें मनवाने में कायम रहे। खंडवा में लगातार पानी में खड़े होने की वजह से लोगों के पैरों की क्या हालत हो गई वो आप इन तस्वीरों में देख सकते हैं। इनके शरीर की जो त्वचा है वो गलनी शुरु हो गई है। और कल हमने देखा खंडवा में ये तस्वीरें यहाँ जबरन पुलिस और प्रशासन ने सत्याग्रह कर रहे लोगों को पानी से बाहर निकाला लेकिन अब पुलिस को चकमा देकर कुछ ही घंटों में ये प्रदर्शनकारी फिर पानी के बीच पहुँच गए और अब यही तरीका अपना रहे हैं कुडुमकुलुम में न्यूक्लीयर प्लांट का विरोध कर रहे स्थानीय ग्रामीण। इन लोगों को आशंका है कि न्यूक्लीयर प्लांट से निकले वाली रेडिएशन से इनकी ज़िंदगी ख़तरे में पड़ सकती है। ये बार-बार जापान में हुए फुकोशिमा रेडिएशन हादसे का हवाला दे रहे हैं कि उसी तर्ज पर यहाँ भी हादसा भविष्य में हो सकता है इसलिए सरकार को यह प्लांट नहीं लगाना चाहिए। लेकिन सरकार ने इन आशंकाओं को खारिज़ कर दिया है यह कहते हुए कि ये प्लांट सुरक्षित है।